Indian J. Soc. & Pol. 11 (01): 143-144 : 2024 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
(July-December 2023), 29 February 2024 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

अष्टावक्र गीता में निहित भारतीय ज्ञान परम्परा से विश्वकल्याण

मनीषा कुमारी[1], बसन्त बहादुर सिंह[2]

[1]शोधार्थिनी, शिक्षा संकाय, आर०बी०एस०कॉलेज, आगरा, उ0प्र0, भारत
[2]प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, शिक्षा संकाय, आर०बी०एस०कॉलेज, आगरा, भारत

ABSTRACT

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा से विश्व कल्याण के लिए संदर्भित है, जो मुख्यतः भारतीय ज्ञान परम्पराओं से युक्त अष्टावक्र गीता में निहित आध्यात्मिक ज्ञान उपदेशों का वर्णन करता है। अष्टावक्र गीता के उपदेशों में अध्यात्म ज्ञान के माध्यम से मनुष्य के समग्र विकास, ज्ञान की एकता एवं विश्व कल्याण की परिकल्पना की गई है। जो भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृति, लोकाचार एवं विश्वकल्याण में परिवर्तन लाने में अपना बहुमूल्य योगदान देने में तत्पर है। अष्टावक्र गीता के उपदेशों का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को आत्म–ज्ञान के माध्यम से विकसित होने के लिए अवसर प्रदान करना है तथा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल एवं आत्मविश्वास का सृजनकर उनके दृष्टिकोण में एकात्म का विकास करना है। एकात्म की भावना विश्व कल्याण के लिए आवश्यक है।

KEYWORDS: *अष्टावक्र गीता, आध्यात्मिक ज्ञान तथा प्राचीन ज्ञान परम्परा।*

शिक्षा मानव निर्माण की प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित किया जाता है। प्रत्येक मानव अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक स्वयं के विकास में लगा रहता है। भारतीय शिक्षा दर्शन में व्यक्ति के सर्वागीण विकास की बात समाहित है। खेल अध्ययन और अध्ययन ही शिक्षा नही हैं, वरन् चिन्तन, मनन, अन्वेषण करके ज्ञान, भाव और कर्म में साम्य भी स्थापित करना हैं। लौकिक ज्ञान के साथ–साथ ब्रह्मज्ञान, ब्रह्माण्ड का ज्ञान तथा आत्म–ज्ञान, अर्जित करना भी शिक्षा है।

भारतीय जनमानस सदा से अपनी संस्कृति, ज्ञान, परम्पराओं व जीवन मूल्यों पर गर्व रहा हैं। भारत संस्कृति व परम्पराओं का धरातल रहा है। मगर अब प्राचीनकाल से चली आ रही समृद्ध भारतीय संस्कृति व ज्ञान परम्पराओं पर आधुनिकता व पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इस कदर हावी हो रहा है कि लोगों की पारम्परिक उसूलों में बदलाव हो चुका है। शहरों से लेकर, गांव, कस्बों तक शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जहां आधुनिकता के खुमार ने विश्व की श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति व परम्पराओं को अपनी जद में न लिया हो। लेकिन आज पाश्चात्य संस्कृति के खुमार में जहां भारतीय संस्कार व कई परम्पराएँ उपेक्षित हो रही है, वही पश्चिमी देशों के लोग भारत की समृद्ध संस्कृति से जुड़ी कई चीजों व संस्कारों को अपने आचरण में शामिल कर रहे हैं। कोरोना काल में विश्व के कई देशों ने हमारी धार्मिक, संस्कृति से जुड़ी पूजा पद्धति, हवन, यज्ञ, योग, आध्यात्म व आयुर्वेद आदि चीजों को अपनी जीवनशैली में अपनाकर भारतीय दर्शन के प्रति गहरी आस्था दिखाई।

हमारे महान मनीषियों के अथक प्रयासों व कड़े परिश्रम द्वारा रचे गए वेद, उपवेद, पुराण, उपपुराण, उपनिषद्, शास्त्र व कई प्राचीन ग्रंथों की रचना संस्कृत भाषा में हुई है। इन ग्रंथों में समाहित ज्ञान को कई विदेशी विद्वानों ने अंग्रेजी व फारसी सहित कई भाषाओं में अनुवाद करके कई देशों में पहुंचा दिया। संस्कृत में रचित हमारे पवित्र ग्रन्थों व वैदिक मंत्रों में हजारों वर्ष पूर्व दुनिया के कई गूढ़ रहस्यों का जिक्र हो चुका था। अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के वैज्ञानिक भी भारतीय प्राच्य ग्रंथों के पन्ने खंगाल कर इनके महत्व को अहसास कर चुके हैं।

प्राचीन समय में ज्ञान, सत्य, आहिंसा, शिष्टाचार, आध्यात्म, अखण्डता व संयम का संदेश देने वाले उन आदर्श, संस्कारों व नैतिकता जैसे मूल सिद्धान्तों के दम पर 'विश्व गुरु' के रूप में भारत दुनिया का नेतृत्व करता था। भारत की प्राचीन संस्कृति में शक्ति व शांति का संदेश तथा शस्त्र व शास्त्र दोनों पूजनीय रहे हैं।

भारतीय दर्शन सम्पूर्ण जगत से समाद्वत है, जो सम्पूर्ण विश्व को समग्रता से देखता है। भारतीय इतिहास में अद्वैतवाद के सिद्धान्त में ज्ञान का अत्यन्त महत्व हैं। अद्वैतवादियों के अनुसार शिक्षा व्यक्ति की ज्ञान प्राप्ति व अज्ञान निवृत्ति का माध्यम हैं। तथा ज्ञान के स्वरूप की विवेचना करते हुए कहा है कि– *"ज्ञान का तात्पर्य केवल मात्र भौतिक पदार्थों की जानकारी नहीं है वरन है, ब्रह्म अथवा आत्मा को जानना ज्ञान है। मनुष्य की आत्मा अनन्त ज्ञान स्वरूप हैं। उसके ऊपर से आवरण का हटाना ही ज्ञान है।"*

जीव तथा ब्रह्म दो नहीं अपितु पारमार्थिक रूप से एकमात्र ही हैं अष्टावक्र गीता भी इसी विचारधारा की पुष्टि करती है। भारतीय पौराणिक साहित्य भण्डार में से आध्यात्म का शिरोमणि ग्रन्थ अष्टावक्र गीता हैं। ज्ञान के सन्दर्भ में अष्टावक्र गीता में उल्लेखित उपदेश में कहा गया– *तवैवाज्ञानतो विश्वं त्वमेकः परमार्थतः। त्वतोन्यो नास्ति संसारी ना संसारी चकश्चन।*

सार के रूप में कहा जा सकता है कि– जब हम अपनी और संसार (विश्व) की एकात्म को स्वीकार करते है तो हम ज्ञान की एकता का अनुभव करते हैं।

1: Corresponding Author

संसार में ज्ञान के समान कुछ भी पवित्र नहीं है, ज्ञान ही मनुष्य की आशंकाओं और जिज्ञासाओं को दूर करता है। अष्टावक्र गीता में कहा गया है कि ज्ञान एक ही परमात्मा का अखंड ज्ञान है ज्ञान की विविधाताए मात्र सांसारिक दृष्टिकोण से है। वस्तुतः सारा ज्ञान एक ही सारे ज्ञान का आधार एक ही परम सत्य है जो कि परमात्मा (ब्रह्म) जो मानव ज्ञान की एकता को समझ लेता है वह ब्रह्म से मिल जाता है वह जीवन में आनंदमय बन जाता है तथा अद्वैतवादी विचारधारा के प्राचीन ग्रंथ अष्टावक्र गीता का अध्ययन ज्ञान मनोविज्ञान पर आधारित होने के साथ, मानव के समग्र विकास में, कुशल व उत्तरदायित्व से परिपूर्ण नागरिक तैयार करने में, ज्ञान की एकता के लिए व मानव में सद्मूल्यों के विकास के लिए सहायक हैं। अतः अष्टावक्र गीता में निहित ज्ञान मानव मूल्य विश्व कल्याणकारी है।

REFERENCES

बिहारी, रमन लाल, *"शिक्षा के समाज शास्त्रीय आधार"* मेरठ,रस्तोगी पब्लिकेशन

दशोरा, नन्दलाल, (2014). *"अष्टावक्र गीता",* आगरा, रणधीर प्रकाशन

लाम्बा, मनोज, *"अष्टावक्र गीता",* अमित पॉकेट

माथुर, एस0एस0 (1997). *"शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार",* आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

सिंह, बाबू जालिमा, (1979). *"अष्टावक्र गीता"*, लखनऊ, तेज कुमार प्रेम बुक डिपो